सृजन-समीक्षा

अंतरा शब्दशक्ति का प्रकल्प

केन्द्रीय रचनाकार

● गणतन्त्र 'ओजस्वी'

सृजक-सृजन-समीक्षा

गणतंत्र जैन "ओजस्वी"

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
इंदौर,मध्यप्रदेश

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर,
इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण: मृदुल जोशी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं| प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत: प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं | प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम ,पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नही |

अन्तरा-शब्दशक्ति में प्रस्तुत

"सृजक"

गणतंत्र जैन "ओजस्वी" का परिचय

नाम -गणतंत्र जैन "ओजस्वी"
जन्मतिथि - 26/01/1981
पिता - श्री सुरेन्द्रकुमार जैन
माता - श्रीमती नीरा जैन
पत्नी - प्रियंका जैन
पुत्र - मार्मिक जैन पुत्री - अन्तरा जैन
जन्म स्थान - खरगापुर, जिला - टीकमगढ़ (म.प्र.)
शिक्षा - शास्त्री, शिक्षा शास्त्री (बी.एड.), एम.ए., एम.एड., एल.एल.बी., नेट
अभिरुचि - लेखन, संचालन, पठन - पाठन
सम्प्रति - स. अध्यापक, (हिन्दी-संस्कृत), एम. डी. जैन इण्टर कॉलेज, हरीपर्वत, आगरा
पता - 1086, EWS जैन मन्दिर के पीछे, सेक्टर - 7, आवास विकास कॉलोनी, आगरा (उ.प्र.) - 282007
मो. - 09457945333
E-mail- gantantraojaswi@gmail.com

साहित्यिक गतिविधियां -
अनेक संस्थाओं में सदस्य, पत्रिकाओं में स्तम्भकार, राष्ट्रीय सेमिनार में सहभागिता एवं धार्मिक कार्यक्रमों में सक्रिय भूमिका |

उपलब्धियां - "अनवरत" साझा काव्य संकलन पर पोएट्री बुक बाजार, लखनऊ द्वारा *काव्य कृष्ण सम्मान"
लोकजंग, स्टोरीमिरर, हिन्दी.कॉम आदि अनेक पत्र पत्रिकाओं में रचनाओं का प्रकाशन, मंचों पर कविता पाठ, कवि सम्मेलनों का संयोजन / आयोजन, आकाशवाणी एवं राष्ट्रीय चैनल पर वार्ता, सफल संचालन, अनेक सामाजिक संस्थाओं द्वारा सम्मानित |
"ध्रुवधाम" मासिक पत्रिका का ४ वर्ष तक सफल प्रबन्ध सम्पादन, अनेक

पुस्तकों का सम्पादन |
"पं. हरिमोहन भट्ट " फकीर" की गजलों का प्रकाशन |
"ओजस्वी मंच" एवं ध्रुवधाम मीडिया की स्थापना कर अनेक युवाओं को मंच एवं प्रतिभा प्रदर्शन के अवसर प्रदान करना |

आत्मकथ्य

जीवन की अनेक विषमताओं से परेशान मन को जब कहीं शांति नहीं मिलती है तब वह किसी एक ऐसे स्थान की तलाश में भटकता है जहां वह अपने विचार प्रस्तुत कर सके, व्यक्त कर सके, बोल सके, समझ सके, समझा सके, असफलताओं से पार एकान्त अपना सके... लेकिन जगत की झंझावाती प्रवृत्ति उसे उलझाना चाहती है.. रोकना चाहती है... मैं भी इसका शिकार बना..... और सर्वस्व होम करने लगा.. भविष्य को संवारने में वर्तमान बिगाड़ने लगा.. स्वयं भी परेशान हुआ..और दूसरे लोगों को भी परेशान करता रहा लेकिन इसी बीच धार्मिक साधना के साथ उपाय के रूप में साहित्य पठन पाठन और साहित्य की साधना से बढ़िया कोई ना तो विकल्प दिखा और ना ही प्रकल्प| इसी दौरान गैर सरकारी क्षेत्र में सेवा करते करते बौद्धिक स्तर पर काव्यरचना का मन बनाया और सर्वप्रथम 2005 में बांसवाड़ा राजस्थान में प्रथम मंचीय प्रथम मंचीय रचना प्रस्तुत की तब से लेकर अनवरत 2012 तक मंच पर रचनाएं पढ़ता रहा फिर एक दिन वागर्थ ग्रुप में आदरणीय मनोज जी ने मुझे जोड़ा, जिसके बाद एक नई ऊर्जा सृजन की ओर लगना शुरू हुई, उसके बाद अन्तरा, अन्तर्मन, उजास, किस्सा कोताह जैसे ग्रुपों में अनेक समृद्ध रचनाकारों के साथ परिचय, समालोचना का एक शिक्षाप्रद सानिध्य मिला और यह कहने में मुझे बिल्कुल भी गुरेज नहीं की रचनाधर्मिता अगर कोई है तो वह लेखन ही है | मंच पर आपको तालियां तो मिल सकती हैं लेकिन आत्म संतुष्टि नहीं , आत्म संतुष्टि के लिए सृजन बहुत बड़ा साधन है इसीलिए मैं छोटा सा रचनाकार आपके बीच अपने सर्जन को प्रस्तुत कर रहा हूँ |

गणतंत्र ओजस्वी

"सृजक का सृजन"

मौजो ! अपनी हद में रहना !

कायरता से कंप जाते हैं,
जब जी चाहे छल जाते हैं,
अनचाहे अनजाने अपने,
आस्तीन में पल जाते हैं |
कुचला जाता फन ऐसों का,
अपने फन को देखे रखना !

पौरुष जब हुंकारें भरता,
शिव का ताण्डव नर्तन चलता,
भूधर के तब शिखर डोलते,
दुन्दुभि डम डम डमरू बजता,
हो लो दो दो हाथ समर में,
जीवन शेष बचाकर रखना !!

सागर को कमजोर न समझो,
अन्धेरों को राज न समझो,
पतवारों को लहरा लहरा,
अपने बल का ठौर न समझो,
पाला जिसने, छलो न उसको,
उसके बिन कुछ छाप न रहना !

गगन गर्जना घोर करेगा,
चपला से मन मोर डरेगा,
मूसलधारा तरल बाण से,
इन्द्रधनुष मन में निकलेगा,
आकर्षण के आकर्षण को,
अपने पास सम्हाले रखना !!

अधूरी कविता

आज कुछ लिखा नहीं,
आज कुछ पढ़ा नहीं,
आज को जो पढ़ सके,
वो आजतक मिला नहीं ||

हर गली हर गाँव में
बरगदों की छाँव में,
घूमती नदी के बीच,
चल रही उस नाव में,
धार को जो काट दे,
वो चाप तो मिला नहीं ||

उड़ा सके जो धूल को,
पनाह दे जो फूल को,
कष्ट में भी खुश रहे,
मसल सके जो शूल को |
उड़ान भर गगन चले,
पवन कोई मिला नहीं ||

सब सुनें कहानियाँ,
प्यार में कुर्बानियाँ,
राह राह जुबाँ पे हों,
दर्द की निशानियाँ,
देश को जगा सकें,
वो तेग तो मिला नहीं ||

साथ छोड़ बढ़ चले,
सुत सुता हृदय बसा,
त्याग सुख की सेज को
राष्ट्र-प्रेम मन बसा ||
हों समर्थ स्वधर्म में
सामर्थ्य वो मिला नहीं ||

मान

ओ अन्तस् के मान हठीले विष-बेलों से हो जहरीले..
दुनिया भर के पाप भरे औ'
चेहरे से हो बड़े सजीले.... ओ अन्तस् के ....

दिग दिगन्त ने पूजा तुमको
मर्त्य लोक के भगवन् तुम हो
कोई कैसे आंख चुरा ले..
आंख झुकाने वाले तुम हो...
हिमपातों के बीच कहां से.
बचे रह गये तुम रेतीले... ओ अन्तस् के ...

प्यारे प्यारे बोल मधुर से,
कायल करते जगतीतल को
जिसपर पड़ती छाया तेरी
होश नहीं रहता फिर उसको
कब तक दोगे छलनायें ये..
कुछ तो सोचो छैल - छबीले.. ओ अन्तस् .....

कहीं प्रतिष्ठा बनती जाती,
कहीं दूरियां घटती जाती..
बिन प्रकाश के तम में छाया
देखो कैसे बढ़ती जाती |
देह बिना..कैसे कद काठी..
बढ़ा, चल दिये ओ गर्वीले.. ओ अन्तस् .....

राहें.!!

टेढ़ी-मेढ़ी...
राहें..
संघर्ष...हौंसला...
बल...दम...सब
परखती हैं..
फिर देती हैं...मंजिलें...
आदमी को..मजबूत बनाकर..
पर..
सीधी..सपाट....राहें..
मंजिल के पास
..नहीं..बनने देती..महान..
नहीं बनाने देती..हौंसला..
बल..मजबूती..
इसलिये....चलो..
हमेशा..
टेढ़ी..मेढ़ी..राहें..
बने रहोगे...दीर्घकाल तक..
सच्चे...राही..!!!

पड़ाव

ये उम्र का पड़ाव है,
चक्र का घुमाव है,
हारकर न बैठना, बढ़े चलो बढ़े चलो |

प्रौढ़ता तो छाप है,
वक्त के घुमाव की,
रीतियाँ चले सभी,
लोक के चलाव की |
वक्त की तरंग में, बहे चलो बहे चलो ||

केश संग रंग ढंग
बदल रहे हैं अपने ही,
आ रहे सम्हालने,
फूल पत्ते अपने ही |
बाग उनको सौंप कर, बढ़े चलो बढ़े चलो ||

राह से कदम मिला,
चल रहा है सिलसिला,
उम्र के इस चक्र में न
खुद को एक पल भुला,
बदल रहे समाज में, बदल चलो बदल चलो ||

खुद को धोखा कितनी बार !!

दम भरते सब भले दिनों में,
बेदम बुरे दिनों का भार |
कितना झूठ पला अंचल में,
छला स्वयं को कितनी बार !!!

सहनशक्ति की सीमा ओछी,
सब धोखों का है व्यापार |
अपने सपने सपने - से हैं,
बाकी के मिथ्या - संसार ||
दौड़ रहा जग इसी स्वार्थ में,
खुद को धोखा कितनी बार !!

चाँद चाँदनी नहीं छोड़ता,
घट-बड़ कर भी चमक रहा,
ऊपर ऊँची लहरें कितनी
सागर भीतर शान्त रहा |
भावों का सागर हममें भी,
धीरज छोड़े कितनी बार..!!

मुश्किल किसको कहो लुभाती,
बरवस जीवन में आ जातीं |
दूर तुरत हम करना चाहें,
समय बिना वे दूर न जातीं ||
कितनी कोशिश हम करते हैं,
होते नहीं तनिक भी पार !!

समय काल में धैर्य साथ हो,
सब अपने अपनों के साथ हो |
हो जाती है जीत समर में,
सत्य पक्ष का सदा साथ हो ||
झूठ नहीं टिकता है किंचित्
चाहे बोलो सौ - सौ बार !!!

प्यारा हिन्दुस्तान लिखूँ...

न राग लिखूँ, न प्रेम लिखूँ, न मैं वियोग के गान लिखूँ..
लिख सकूँ अगर मैं कुछ थोड़ा, तो प्यारा *हिन्दुस्तान* लिखूँ |

जिस तरह वेद सब गाते हैं,
गीता कुरान तुलसी वाणी,
माथे का नूर बनी मीरा,
ज्यों बुद्ध सूर सन्मति-वाणी ||
आडम्बर को फेंक कबीरा,
भूषण विलास रसखान लिखूँ ||
लिख सकूँ .....

जिसका रक्षक है हिमपर्वत,
गोदी में गंगा बहती है |
जन-गण के हृदयाँगन में,
पावनता पूरी रहती है ||
जो द्रोह कपट से रहे दूर,
निश्छल मन का सम्मान लिखूँ..
लिख सकूँ.....

जिसकी पुण्यकथा पढ-सुन
बालक जवान होते हँसकर,
ले बरछी ढाल कृपाण असि,
हुँकार भरे पौरुष भरकर ||
जो शीष कटा रक्षा करते हैं,
उनका बस यशगान लिखूँ..
लिख सकूँ.....

तन-मन से जो बड़ी सरल
या प्रेम लता - सी लगती हैं
आ जाये समय तो वो ज्वाला
शत्रू पर भारी पढ़ती हैं |
हैं जहाँ बेटियाँ सरल-कठिन,
हम सबका हैं अभिमान लिखूँ..
लिख सकूँ.....

है नहीं भेद की कुटिल चाल,
सब आपस में मिलकर रहते,
जीवन विकास के हर पथ पर,
सब साथी बनकर ही चलते,
आफत कांपे डर से उनके,
रे!'ओजस्वी' गुणगान लिखूँ...
लिख सकूँ....

"सृजन की समीक्षा"

1.

अंतरा शब्द शक्ति परिवार को मेरा सादर अभिवादन
आज के उत्सव मूर्ति श्री गणतंत्र ओजस्वी जी को पहले तो जन्म दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ दूसरी केंद्रीय रचनाकार विशेषांक में प्रस्तुत होने पर हार्दिक **बधाई और शुभकामनाएँ** ।
आपका परिचय, साहित्यिक गतिविधियाँ, उपलब्धियाँ, संपादन, प्रकाशन, मंच, लेखन का उद्देश्य, आत्मकथ्य, और रचनाएँ बहुत सहज, सरल, सार्थक अभिव्यक्ति लगी। साहित्यकार समाज के गुण दोषों को काव्य या गद्य में समाहित कर, दशा और दिशा से अवगत कराता है, आप दोनों ही तरह के सृजन में सफल रहे हैं, आप निरंतर नई ऊंचाई छूएँ, आपका साहित्य धरोहर बने, माँ सरस्वती का आशीर्वाद सदा बना रहे, स्वस्थ रहें, प्रसन्न रहें।

पिंकी परुथी "अनामिका"

2.

गणतंत्र दिवस पर और जन्मदिवस पर केंद्रीय रचनाकार के रूप में गणतंत्र ओजस्वी जी को बहुत-बहुत **बधाई** ।

पटल पर गणतन्त्र ओजस्वी जी की रचनायें पढ़ने का सौभाग्य कई बार मिला। हर बार मैं इनकी काव्य प्रतिभा से प्रभावित हुई हूँ। आत्मकथ्य पढ़ कर तो और भी अच्छा लगा। इतनी छोटी उम्र में इतनी अच्छी कविताएं लिखना और इतनी संस्थाओं से जुड़ाव, इतनी उपलब्धियां हासिल करना बहुत ही गौरव की बात है।वह माँ भी धन्य हो गई है जिसने ओजस्वी जैसे पुत्र को जन्म दिया और यह गणतंत्र दिवस भी धन्य हो गया जिस दिन गणतंत्र ने पृथ्वी पर जन्म लिया और नाम भी

रखा गणतंत्र ओजस्वी। वाह! कितनी तारीफ करूँ!! हर रचना शब्द सौन्दर्य व भाव सौन्दर्य से ओतप्रोत है।सभी में कोई न कोई प्रेरक संदेश है। तारीफ के लिए शब्दों का अभाव है लेकिन कुछ न कहना भी ठीक नहीं है इसलिए गणतंत्र ओजस्वी जी की रचना पर मेरे विचार:-

मौजो ! अपनी हद में रहना !
पौरुष जब हुंकारें भरता,
शिव का ताण्डव नर्तन चलता,
आकर्षण के आकर्षण को,
त्याग सुख की सेज को
राष्ट्र-प्रेम मन बसा |
सामर्थ्य हों समर्थ स्वधर्म में
कटु सत्यख
मान
ओ अन्तस् के मान हठीले
कहीं प्रतिष्ठा बनती जाती,
कहीं दूरियां घटती जाती ,.... बहुत खूब
राहें.!!
टेढ़ी-मेढ़ी राहों पर अपने पौरूष के बल पर ही मंजिल तक पहुँचा जा सकता है।
पड़ाव
उम्र के पड़ाव हारकर बैठने से बेहतर है ,
बढ़ते चलना
प्रौढ़ता तो छाप है,
वक्त के घुमाव की,इसलिए
वक्त की तरंग में बहे चलो

खुद को धोखा कितनी बार !!

दम भरते सब भले दिनों में,
बेदम बुरे दिनों का भार |
कितना झूठ पला अंचल में,
छला स्वयं को कितनी बार !!!
सहनशक्ति की सीमा ओछी,
सब धोखों का है व्यापार |
अपने सपने सपने - से हैं,
बाकी के मिथ्या - संसार ||

प्यारा हिन्दुस्तान लिखूँ...

न राग लिखूँ, न प्रेम लिखूँ,
न मैं वियोग के गान लिखूँ..
लिख सकूँ अगर मैं कुछ थोड़ा,
तो प्यारा हिन्दुस्तान लिखूँ ।

जिंदगी में नित्य नए सोपान गढ़ते रहो। मेरा आशीर्वाद सदैव तुम्हारे साथ है। देशप्रेम की तुम्हारी भावना इसी तरह बनी रहे।आज समाज को ऐसे ही कलमकारों की जरूरत है जो लोगों की सुप्त आत्मा को झिंझोड़ सकें।

राधा गोयल

3.

गणतंत्र पर्व पर गणतंत्र जी सभी रचनाये भाव बोध औऱ युग बोध से उक्त है । दोहरी **बधाई** जन्म दिन मुबारक़ साथ ही राष्ट्रीय महत्व के प्रकाशन पर बेहतर रचनाओं के लिए **बधाई**

राजू उपाध्याय

5.

गणतंत्र तुम्हारा जन्मदिवस
गणततंत्र दिवस पर शुभकारी,
हो मंगलमय यह जीवन पथ
प्रभुकृपा रहे अविरल जारी ।
तुम जोशीले ,साहित्य सृजन के
ओजस्वी रचनाकार बड़े,
हो सशक्त लेखनी और वाणी
यश कीर्ति शिखर पर रहो खड़े ।
शुभकामना शुभेच्छा है मेरी
प्रगति पथ प्रभु जी तुम्हें वरें ,
ज्ञान, चेतना दिव्य ज्योति से
हृदय तुम्हारा सदा भरें ।।
जन्मदिन की हार्दिक **बधाई** ।

सुधांशु रंजन

6.

गणतंत्र जी के जन्मदिन पर विशेषांक निकालना मेरे लिए भी सौभाग्य का अवसर है क्योंकि यह एक सधी हुई कलम के सिपाही को अन्तरा-शब्दशक्ति की ओर से एक भावनात्मक उपहार है।

परिचय प्रभावी और आत्मकथ्य प्रेरक है।

ओ अन्तस् के मान हठीले
और तुम भी सुनो मौजो !
अपनी हद में रहना !
इन चुनौतियों भरे संवाद के बाद
अधूरी कविता से भी

आदमी को..मजबूत बनाकर..
उम्र के पड़ाव हारकर बैठने से बेहतर है ,
बढ़ते चलना,... ये रहस्य बताकर
सीधी..सपाट....राहें.. हो या टेढ़ी मेढ़ी
रुकती है किसी न किसी
पड़ाव पर आकर
सब को ये समझाकर
खुद से पूछा एक सवाल
खुद को धोखा कितनी बार !!
फिर भ्रम से अपनी लेखनी को
दूर हटाकर
किया एक सुंदर निर्णय
मैं अब से
न राग लिखूँ, न प्रेम लिखूँ,
प्यारा हिन्दुस्तान लिखूँ...
ऐसे रचनाकार को मैं
नमन लिखूँ, वंदन लिखूँ
शुभकामनाएँ हज़ार लिखूँ
दुआएं बार बार लिखूँ,..

गीतों की सुंदर वेणी अन्तरा के नाम को सार्थक करती प्रतीत होती है। लेखन भाव शैली शिल्प और व्याकरण से सौंदर्य से परिपूर्ण है। आपकी जीवन यात्रा के साथ साथ आपकी उज्वल साहित्य यात्रा की ढेर सारी शुभकामनाओं सहित पुनः **बधाई**।

डॉ. प्रीति सुराना
वारासिवनी

अन्तरा-शब्दशक्ति के व्हाट्सअप एवं फेसबुक समूह में १३ नवम्बर २०१६ दिन रविवार से हर रविवार को 'सृजक-सृजन-समीक्षा विशेषांक' आरम्भ किया गया जिसमें 'सृजक' का परिचय, 'सृजक का सृजन' और पाठकों की भूमिका में समूह के अन्य सभी सदस्यों द्वारा की गई 'सृजन की समीक्षा' को अन्तरा-शब्दशक्ति के फेसबुक पेज और समूह पर सहेजा गया है। अब तक वरिष्ठ और नवोदित रचनाकारों सहित लगभग ६५ रचनाकारों को प्रस्तुत किया जा चुका है और आगे भी गतिविधि सतत क्रियान्वित है।

'सृजन-समीक्षा' एक प्रयास है 'सृजक के सृजन को समीक्षा सहित' पाठकों तक वेबसाइट पर ईबुक और मुद्रित पुस्तकों के माध्यम में महत्वपूर्ण दस्तावेज की तरह सहेजने का। आशा है यह महत्वपूर्ण दस्तावेज सृजक और साहित्य जगत दोनों के लिए अनमोल धरोहर बनेगा। अनंत शुभकामनाओं सहित।

डॉ. प्रीति सुराना

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

सहयोगी संस्थान

हिन्दी ग्राम भाषा समन्वयक
www.hindigram.com

मातृभाषा उन्नयन संस्थान (पंजी.) हिंदी भाषा के विकास हेतु प्रतिबद्ध
www.matrubhashaa.org

मातृभाषा वैचारिक महाकुम्भ
www.matrubhashaa.com

अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन
१५ नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१
संपर्क: ९४२४७६५२५९ । अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com